विकलांग मंच

विकलांग समुदाय का मार्गदर्शक पाक्षिक

वर्ष : 29 अंक: 22	जयपुर 16 मई, 2015	RNI No.: 46429/86 Po.Regn.No.:Jaipur City/207/2015-17	वार्षिक शुल्क: 50/- प्रति मूल्य: 2.50

विकलांग मंच के आजीवन/वार्षिक सदस्य बनें एवं दूसरों को भी इसके सदस्य बनने की प्रेरणा दें

विकलांग मंच

8/141, मालवीय नगर, जयपुर-302017

फोन:0141-2547156, 9351960369,9352320013, फैक्स:0141-4036350

E-Mail:vicklangmanch@ymail.com E-Mail:vicklangmanch@gmail.com

प्रधानमंत्री ने एजुकेशन सिटी में बाधारहित सक्षम विद्यालय का किया अवलोकन

रायपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने छत्तीसगढ़ के जिला मुख्यालय दंतेवाड़ा के पास ग्राम जावंगा स्थित एजुकेशन सिटी में विशेष आवश्यकता वाले नि:शक्त बच्चों की शिक्षा के लिये संचालित सक्षम विद्यालय का अवलोकन किया।

मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह भी उनके साथ थे। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री का वहां दृष्टिबाधित बालिका महेश्वरी, श्रवणबाधित नंदनी एवं तुलसीराम तथा अस्थि बाधित बालिका ने आत्मीय स्वागत किया। मोदी और डॉ.रमन सिंह ने बच्चों का उत्साह बढ़ाते हुए उन्हें आशीर्वाद प्रदान किया। प्रधानमंत्री बच्चों का अभिवादन स्वीकार करते हुए उनसे स्नेहपूर्वक मिले। श्रवणबाधित तुलसीराम ने प्रधानमंत्री को सांकेतिक भाषा में उनका नाम बताया।

प्रधानमंत्री ने बाधारहित विद्यालय में स्पीच थैरेपी कक्ष, श्रवणबाधित अध्ययन कक्ष, फीजियोथैरेपी कक्ष का अवलोकन कर वहां निवासरत बच्चों की शैक्षणिक सुविधाओं का जायजा लिया। प्रधानमंत्री ने श्रवणबाधित बच्चों के क्लास रूम में छात्र भूपेश से पूछा आप कैसे हैं।

श्रवणबाधित छात्र भूपेश ने कहा कि पहले से बहुत अच्छा हूं। प्रधानमंत्री को दृष्टिबाधित छात्र अंजन ने गाना सुनाया। छात्र अंजन के गायन एवं से वादन प्रतिभा से अभिभूत होकर प्रधानमंत्री ने भी उनका साथ देकर उत्साहवर्धन किया।

विद्यालय के पदाधिकारियों ने बताया कि सक्षम प्रोजेक्ट का उद्देश्य विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिये बाधारहित वातावरण तैयार कर उन्हे शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना है। इस विद्यालय के बाधारहित माहौल में 133 बच्चे अध्ययनरत हैं। सक्षम विद्यालय में शारीरिक अक्षमता के हिसाब से कक्षाओं के कमरे विशेष रूप से तैयार किये गए हैं। यहां फुटपाथ से लेकर टॉयलेट के निर्माण में इस बात का ध्यान रखा गया है कि दैनंदिनी के कार्यों को करने में किसी विशेष तरह की तकलीफ बच्चों को नहीं आए। दृष्टिबाधित बच्चें यहां लगे विशेष तरह की टाईल से यह पता लगा लेते हैं कि उन्हे अब मुड़ना है। गाईडेंस टाईल में लंबी पत्थर की लकीर उकेरी गई है जिसे बच्चे अपने पैरों से महसूस कर परिसर में आगे बढ़ जाते हैं। वहीँ परिसर में स्टैंडिंग टाईल में पहुंचकर बच्चे रूक जाते हैं और वहां से मुड़कर क्लॉस रूम में पहुंच जाते हैं।

बच्चों के लिये यह छत्तीसगढ़ का प्रथम बाधारहित शैक्षणिक संस्थान है। यहां नि:शक्त बच्चों के लिये ब्रेल लिपि का पुस्तकालय है जहां दृष्टिबाधित बच्चों के लिये ब्रेललिपि में किताबों की अच्छा संग्रह है। अस्थिबाधित बच्चों के लिये निर्मित इस आवासीय संस्था फीजियोथैरेपी एवं श्रवणबाधित बच्चों के लिये स्पीच थैरपी की विशेष सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। राजीव गांधी शिक्षा मिशन के मद से बाधारहित परिसर का निर्माण कराया गया है। सक्षम विद्यालय में श्रवणबाधित बच्चों के लिये स्पीचथैरेपी की सुविधा है। यहां श्रवणबाधित बच्चों का सबसे पहले ऑडियोमीटर परीक्षण किया जाता है। इससे यह पता लगाया जाता है कि बच्चे की सुनने की क्षमता कितनी है। इसके आधार पर उन्हें श्रवण मशीन दी जाती है। वहीं कंठ में परेशानी के कारण बोल नहीं पाने वाले बच्चों को स्पीच थैरेपी के जरिये अलग-अलग आवाज एवं विभिन्न दिशाओं से आने वाली आवाज को पहचानने के लिये स्पीचथैरेपी से उपचार किया जाता है। स्पीच बाधा वाले गंभीर बच्चों को ओष्ठ पठन एवं सांकेतिक भाषा सिखाई जाती है।

11 वर्षीय नेत्रहीन बना न्यूज एंकर, पढ़ता है लाइव न्यूज

कोयंबटूर। तमिलनाडू के एक न्यूज चैनल ने एक ट्रांसजेंडर को अपने टीवी का एंकर बनाने के बाद अब एक 11 वर्षीय नेत्रहीन लड़के को न्यूज रीडर के तौर पर रखा है। जिसे चैनल पहला ऐसा न्यूज रीडर होने की बात कह रहा है। 11 वर्षीय श्रीरामानुजम जन्म से ही नेत्रहीन हैं और चैनल पर ब्रेल लिपी का प्रयोग कर 22 मिनट की न्यूज लाइव पढ़ते हैं। रामानुजम ने हाल ही में नेपाल त्रासदी और महिन्दा राजपक्ष के मामले की न्यूज टीवी पर पढ़ी है।

चैनल के चेयरमैन जीएसके सेल्वाकुमार ने बताया कि रामानुजम से न्यूज रीडिंग कराने के पीछे उनका उद्देश्य लोगों को नेत्रदान के प्रति जागरुक कराना है। जिससे रामानुजम जैसे प्रतिभावान लोग भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें। उन्होंने बताया कि रामानुजम को अभी हफ्ते की स्पेशल खबरों को ही पढ़ते हैं जल्द ही उन्हें रोज न्यूज पढ़ने के लिए बुलाया जाएगा।

पांचवी कक्षा के छात्र रामानुजम कहते हैं कि नेत्रहीन होने के बावजूद अपने लक्ष्य को पाने के लिए वे टीवी को ही अपना माध्यम बनाना चाहते थे जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग उन्हें यह करता देख सकें। रामनुजम शहर के बाहरी इलाके में स्थित एक सरकारी स्कूल में पढ़ते हैं और वे अपनी खबर को टीवी पर पढ़ने से पहले कम से कम छह बार पढ़ते हैं। उन्होंने बताया कि पहली बार न्यूज रीडिंग करते वक्त वे पहले दो मिनट डरे थे इसके बाद उन्होंने खबर को फर्राटे से पढ़ दिया।

केयर्न ने विकलांगों के लिए शुरु किया कॉल सेंटर

नयी दिल्ली। तेल एवं गैस खोज और उत्खनन क्षेत्र की निजी कंपनी केयर्न इंडिया ने युवाओं विशेषकर विकलांगों और महिलाओं को आर्थिक दृष्टि से सशक्त बनाने के उद्देश्य से ग्रामीण कॉल सेंटर (बीपीओ) 'संवृद्धि' की शुरुआत की है। केयर्न इंटरप्राइजेज सेंटर (सीईसी) द्वारा राजस्थान में थार जिले के बाड़मेर में शुरू किये गये इस कॉल सेंटर में वहाँ के 15 विकलांग युवाओं को 'स्पेशल 15' के तहत रोजगार परक प्रशिक्षण दिया गया है। इसके अंतर्गत उन्हें कम्प्यूटर, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, इंटरनेट और हार्डवेयर का नि:शुल्क प्रशिक्षण दिया गया है। पश्चिम भारत के पहले ग्रामीण बीपीओ में वर्तमान में 200 कर्मचारी हैं जिन्हें भविष्य निधि, चिकित्सा और बीमा सुविधाओं के साथ प्रति माह 6000 वेतन दिया जाता है।

मिले 10 प्रतिशत आरक्षण

कानपुर। राष्ट्रीय विकलांग पार्टी ने विकलांग विधेयक में गलत संशोधन के विरोध में शास्त्री नगर सेन्ट्रल पार्क में धरना देकर राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि सरकार के विधेयक में संशोधन करने से 100 प्रतिशत विकलांगता वाले व्यक्तियों को सरकारी नौकरियों में समायोजन के अवसर समाप्त हो जाएंगे। 5 प्रतिशत आरक्षण से विकलांगजनों में विवाद पैदा होगा। भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलेगा, सरकार को 10 प्रतिशत का आरक्षण विकलांगजनों को उनकी आबादी के हिसाब से देना चाहिए। वीरेन्द्र कुमार ने कहा कि विकलांग एसो. व राष्ट्रीय विकलांग पार्टी लम्बे समय से विकलांगजनों को 10 प्रतिशत का आरक्षण देने, सामाजिक समानता कानून पारित कर नौकरी रोजगार व सामाजिक सुरक्षा की 100 फीसदी गारन्टी की मांग करती रही है। सरकार विकलांगजनों को आपस में लड़ाने व बांटने का काम कर रही है। जिसके खिलाफ देश व्यापी आन्दोलन दिल्ली में शुरू किया जायेगा। धरने में पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव वीरेन्द्र कुमार के अलावा अल्पना कुमारी, बंगाली शर्मा, अशोक कुमार, अरविन्द सिह, दिलीप कुमार, संध्या गुप्ता, रविन्द्र बाजपेई आदि कार्यकर्ता सम्मिलित थे।

विचार मंच

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।
जिनको कछु नहि चाहिये, वे साहन के साह॥
अर्थः जिन्हें कुछ नहीं चाहिए वो राजाओं के राजा हैं। क्योंकि उन्हें ना तो किसी चीज की चाह है, ना ही चिंता और मन तो बिल्कुल बेपरवाह है।
-रहीम जी

कल तक जो चल नहीं पाए, आज दौड़ रहे हैं

दिशा की ओर से बीएचईएल के सहयोग से सांगानेर तहसील के भांकरोटा, जयसिंहपुरा और महापुरा में आयोजित हुए समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम में लाभांवित हुए 168 लोग, विशेष योग्यजनों के समुचित विकास पर आधारित अपनी तरह का पहला प्रोजेक्ट

जयपुर। विशेष बच्चों के लिए कार्यरत दिशा की ओर से सरकारी उपक्रम बीएचईएल (भेल) के सहयोग से सांगानेर तहसील के भांकरोटा, जयसिंहपुरा और महापुरा ग्राम पंचायत में आयोजित किए जा रहे समुदाय आधारित पुनर्वास कार्यक्रम में करीब 168 लोग लाभांवित हुए। गौरतलब है कि विशेष योग्यजनों के समुचित विकास पर आधारित अपनी तरह के इस पहले प्रोजेक्ट का शुभारंभ 8 दिसंबर, 2014 को भेल के सीनियर एग्जीक्यूटिव रिपनदीप सिंह ने किया था। कार्यक्रम का उद्देश्य उन विशेष योग्यजनों तक पहुंचना है, जो अपनी मजबूरियों के चलते उनके लिए काम करने वाली दिशा जैसी संस्थाओं तक नहीं पहुंच पाते।

दिशा की निदेशक कविता अपूर्वा वर्मा ने बताया कि पिछले चार महीने से लगातार जारी इस कार्यक्रम में अब तक करीब 168 लोग लाभांवित हो चुके हैं। एम.एस.शेख के निर्देशन में आयोजित हुए इस कार्यक्रम के तहत दिशा के विशेषज्ञों, सीनियर फिजियोथैरेपिस्ट और साइकोलॉजिस्टों की ओर से सभी उम्र वर्ग के विशेष योग्यजनों की स्पेशल एजुकेशन, स्पीच थैरेपी, फिजियो थैरेपी और ऑक्यूपेशनल थैरेपी सहित विभिन्न प्रक्रियाओं के जरिए उनकी समस्याओं का निदान किया गया। कार्यक्रम का सबसे बड़ा लाभ उन बच्चों, लोगों को मिला जो कल तक चल नहीं पा रहे थे, वे आज कार्यक्रम में उपचार के बाद दौड़ने के काबिल हो गए।

इस दौरान विशेष योग्यजनों के कल्याण के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी भी दी गई। वर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान दिशा की ओर से विकलांगता को लेकर एक सर्वे रिपोर्ट भी जारी की गई। इसके मुताबिक, इन तीनों ग्राम पंचायतों में विकलांगता का स्तर 15 प्रतिशत आंका गया है, जो कि साल 2011 में जारी वर्ल्ड हैल्थ ऑर्गनाइजेशन की वर्ल्ड हैल्थ रिपोर्ट ऑन डिसेबिलिटी में दर्शाई गई विकलांगता के 15 प्रतिशत के बराबर है।

कार्यक्रम की कुछ सक्सेस स्टोरीज

आग देखते ही डरने वाली भांकरोटा की अर्चना अब अपनी मम्मी के साथ किचन में हाथ बंटाती है।

भांकरोटा का दिलशाद जो पहले अपना हाथ-पैर हिला भी नहीं पाता था, अब थैरेपीज से उपचार के बाद आसानी से अपनी बॉडी को मूव कर लेता है।

सेरेब्रल पाल्सी से ग्रस्त भांकरोटा का ही गुरुचरण अब न केवल अपनी बॉडी को मूव करा लेता है, बल्कि रूट्स फर्नीचर और अन्य 2डी इमेजेज को भी बेहद आसानी से पहचान लेता है।

जयसिंहपुरा का कैलाश हैम्पेल्जिया से पीड़ित होने के कारण हिल-डुल नहीं पाता था, लेकिन अब सहारे के साथ चलने लगा है।

जयसिंहपुरा की नीरू जो कि डाउन सिंड्रोम से पीड़ित है, वह चलना भी नहीं जानती थी, लेकिन अब वह बिना किसी सपोर्ट के आसानी से चल लेती है।

मानसिक रोग से पीड़ित जयसिंहपुरा का ओमप्रकाश अब गिनती सीख गया है। यहां तक कि अपनी शर्ट के बटन भी खुद लगा लेता है।

इंटेलेक्चुअल इंपेयरमेंट से पीड़ित महापुरा की मनीषा पुनर्वास कार्यक्रम के बाद अब एक से लेकर 10 तब गिनना सीख गई है।

सेरेब्रल पाल्सी से पीड़ित महापुरा का हर्ष खारा लंबी दूरी तक चल नहीं पाता था, लेकिन अब बहुत दूर तक चलने में सक्षम है।

पुनर्वास पर आवाज उठाने वालों की अनसुनी

विकलांग लोगों के संपूर्ण पुनर्वास पर आवाज उठाने वालों की तादाद अब भी गिनी-चुनी और अनसुनी है। हो भी क्यों न! क्योंकि वह आर्थिक और राजनैतिक स्तर पर कम और कमजोर है इसलिए बात चाहे शिक्षा, स्वास्थ्य या रोजी-रोटी की हो, उनकी जगह कहीं नहीं हैं। अपने यहाँ प्रतिनिधित्व पर आधारित लोकतंत्र का राज है। उनके हिस्से वोट की ताकत नहीं, इसलिए किसी चुनावी घोषणापत्र में नहीं। इसलिए योजना या नीति में नहीं। इसलिए प्रशासनिक कार्यप्रणाली की पहुँच से दूर या अकसर छूटे हुए हैं। मतलब वह लोग अब तक मुख्यधारा से कटे रहे हैं और ऐसा बने रहने के लिए मजबूरी के शिकार हुए है। एक तरफ ऊँची कुर्सी पर बैठे साहब लोग कहते हैं कि विकास में सबका साथ चाहिए। मगर सवाल है कि उन्हें जब मौका देने के पहले ही रोक दिया जाएगा तब वह कैसे समाज में अपनी रचनात्मक भागीदारी निभा पाएंगे। दूसरा, यह हताशा से घिरा ऐसा समुदाय है जो अपने प्रति कभी भरोसा कायम ही नहीं कर पाया। उसका कतार में सबसे आखिरी में होना स्वाभाविक है। दरअसल, विकलांगता को उसकी व्यापक और वास्तविकता में समझने के लिए एक जमीन चाहिए। ऐसी जमीन जिस पर विकलांगता के कारण और उसकी परिस्थितियों पर प्रकाश डाला जा सके। आज का दौर बाजार और तकनीक की दौड़ है। इस दौड़ में गर्भावस्था के दौरान ही विकलांगता को लेकर भेदभाव बढ़ता जा रहा है। वह भी शिक्षित और शहरी समाज के सभ्य समझे जाने वाले समुदाय में। अब गर्भ में ही पल रहे लड़का-लड़की, उसकी शारीरिक बनावट और लिंग संबंधी जानकारी पायी जा सकती है। यह (जंगल में न रहने वाले नागरिकों का झुण्ड) शिशुओं को गर्भ में ही खत्म करने को लेकर उतावले है। ऐसे में यदि उन्हें यह मालूम हो जाए कि एक तो लड़की और उस पर भी विकलांग है तो भला ऐसे भ्रूण की खैर कितने सेकेण्ड और अगर वह गलती से आ जाए तो ऐसा परिवार बेचारा बन जाता है। समाज का नकारात्मक सोच और खुद का कोई काम कर पाने को लेकर गिरा भरोसा बेकारी से निकलने नहीं देता। जब वह किसी और के भरोसे हो जाता है तो उसकी भावनाएं इच्छा और फैसलों को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। हमारा समाज भी धार्मिक या सामाजिक तौर पर दान देने की गलत परंपरा को निभाता है। अगर विकलांग समुदाय की मानवीय स्वभाव से जुड़ी अन्य जरूरतों पर बात की जाए तो सेक्स को नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता। एक तो खुद से ही दूसरा, दूसरों की देखकर उन्हीं की तरह अपनी महत्वाकाक्षाओं को तृप्त करना चाहते है। मगर इस बीच आने वाली विकलांगतारूपी पीड़ाएँ बाधा बनती हैं। जब उनकी इस प्रकार की माँग पूरी नहीं हो पाती तो मानसिक संतुलन की स्थिति बिगड़ती है। नाकामयाबी की ऐसी अवस्था कुछ गलत होने का अंदेशा जताती है। खैर, पूरूष तो किसी तरह अपने हिस्से की जिन्दगी जी लेते है मगर महिलाओं के लिए जिंदगी बद से बदतर बन जाती है। क्योंकि उसके लिए तो बंधन हैं, मर्यादाओं की एक दहलीज है। दहलीज के बाहर निकलने में ऐतराज। दहलीज के भीतर रहने में समस्याएँ। फिर, गरीबों का रेनबसेरा बहुत छोटा होता है। जो सीमित संसाधनों से बने होता है। एकाध कमरा और तंग दीवारें होती हैं। इन तंग दीवारों में परिवार के दूसरे सदस्यों की सेक्स गतिविधियाँ उनकी भावनाओं को कब तक रोक सकेगीं! भावनाएँ जागृत होती है। अगर वह अपनी इच्छाओं को दबाएँ भी तो इससे मानसिक हालत बिगड़ने का खतरा बन जाता है। कुछ परिवार यह सोचकर कि इनमे सेक्स संबंधी भावनाएँ होती ही नही है, उनकी तरफध्यान नहीं देते। उनकी यही कमजोरी उनके शोषण की एक मुख्य वजह बन जाती है। विवाह की समस्या में और रोड़े अटकाती है। आज के व्यक्तिवादी समाज में वृध्दों की हालत वैसे ही कमजोर हो गई है। ऐसे में विकलांग समुदाय के वृध्द लोगों की बात करें तो स्थिति ज्यादा नाजुक बन जाती है। देखा जाए, तो इस उम्र तक आते-आते विकलांग व्यक्ति या तो जी ही नही पाते या आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाते है। और जो दोनों स्थितियों से बच निकलते है वह अकेलापन लिए होते है। अभावग्रस्त जीवन को ढ़ोने और केवल दुख को महसूस करने के लिए जिंदा रहते हैं। इसके लिए जिम्मेदार कौन। जबाव आएगा खुद विकलांग आदमी, परिवार या समाज। तीनों के पहले जो चौथा नाम आना चाहिए वह है : सरकार। क्योंकि संविधान में हम एक जनकल्याणकारी गणराज्य की सीमा में रहते हैं। जहाँ सभी को बराबरी से जीना का हक है। सरकार के हिसाब से वह अपनी जिम्मेदारियाँ वखूबी निभा रही हैं। बहुत खूब। अपनी सारी जिम्मेदारियों को निजी हाथों में बेचकर। लेकिन निजी क्षेत्र में ऐसे लोगों के लिए सही राय तो बन ही नहीं पा रही हैं या बन ही नहीं सकती हैं। फिर सारा काम व्यापारी ही कर लेंगे तो सरकार की जरूरत क्या है। इस सबके बाद जो सरकार का रोल बचता है उसके भीतर क्या वाकई ऐसे इंसान अपने हक और फायदों को जानने लगे है। अगर ऐसा कुछ भी नहीं हैं तो यह हालत क्यों है। क्योंकि आज दलित, आदिवासी, अल्पसंख्यक और महिलाओं की आवाज में दम है मगर इसी वर्ग में और पीछे ढ़केल दिए गए विकलांग साथी मौन है। उन्हें किसी और की आवाज का इंतजार है। दया नहीं, काम चाहिए। बराबरी और सम्मान चाहिए॥

पंख से कुछ नहीं होता.., हौसलों से उड़ान होती है

गौरीगंज। किसी ने ठीक ही कहा है कि, मंजिलें उन्हीं को मिलती हैं, जिनके सपनों में जान होती है। पंख से कुछ नहीं होता, हौंसलों से उड़ान होती है। उपरोक्त लाइनों को हकीकत में बदलकर विट्टन गुप्ता ने कुदरत द्वारा छीन लिए गए दोनों हाथों के बिना ही न सिर्फ अधूरे सपने पूरे किए, बल्कि समाज को भी विकलांगता से लड़ने की प्रेरणा दी है।

विकलांगता को अभिशाप मानने वालों के लिए अमेठी के सनहा गांव में 14 फरवरी 1988 को जन्मी विट्टन गुप्ता ने करारा जवाब दिया है। कृषक माताप्रसाद गुप्ता के तीन पुत्र और तीन पुत्रियों में सबसे बड़ी विट्टन बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थी। उसके दिल में आसमां छूने के सपने थे, कुछ कर गुजरने की तमन्ना थी। पिता ने भी अपनी बड़ी बिटिया के सपनों को पूरा करने के लिए कोई कमी नहीं छोड़ी। पढ़ाई में जी-जान से जुटी विट्टन जब बी.काम फाइनल में पहुंची तभी 8 मार्च 2010 की सुबह उसकी जिंदगी में अंधेरा लेकर आई। किसी काम से घर से बाहर जा रही विट्टन बिजली के टूटे हुए तारों की चपेट में आ गई। अस्पताल में विट्टन के दोनों हाथ कलाइयों के ऊपर से काट देने पड़े। माता-पिता के साथ ही पूरा परिवार सदमे में आ गया। तब विट्टन ने न सिर्फ परिजनों को ढांढ़स बंधाया, बल्कि अपनी अधूरी पढ़ाई पूरी कर बी.काम उत्तीर्ण किया और कंप्यूटर का कोर्स किया।

नए जिले अमेठी में कर्मचारियों की कमी को देखते हुए जिलाधिकारी से बिजली विभाग की शिकायत करने पहुंची विट्टन की योग्यता को तत्कालीन डीएम विद्याभूषण ने पहचानते हुए उसे विकास भवन में संविदा कर्मी के रूप में नियुक्ति दे दी और विद्युत विभाग को क्षतिपूर्ति देने का निर्देश दिया। इसी बीच विद्याभूषण का तबादला हो गया। विट्टन को अभी तक क्षतिपूर्ति तो नहीं मिल सकी, लेकिन विकास भवन में संविदाकर्मी के रूप में कंप्यूटर चलाकर वह चार हजार रुपये प्रतिमाह की नौकरी कर अपने परिवार का आर्थिक सहयोग कर रही है। बातचीत में उसने कहाकि भले ही बिजली ने उसके हाथ छीन लिए, लेकिन उसने अपने हौंसलों को कमजोर नहीं पड़ने दिया। मां-बाप और परिवार ने भी उसके हौसले बढ़ाए। आज विट्टन समाज के लिए भी प्रेरणास्रोत बन चुकी है।

विकलांग मंच कार्यालय: प्लाट नं. 141, सेक्टर-8, मालवीय नगर, जयपुर-302017, फोन:0141-2547156. फोटो टाइपसेटिंग: टास्क ग्राफिक्स (मोबा.:9828278728)। मुद्रित: श्रीराम आफसेट, जोरावरसिंह गेट बाहर, आमेर रोड, जयपुर। संरक्षक: डी.आर.मेहता (रिटा.आईएएस)। प्रधान संपादक: एम.आर.सिंघवी (रिटा.आईआईएस)। प्रकाशक मुद्रक एवं सम्पादक: एन.के.खत्री। संपादकीय सलाहकार:डॉ. अरुण माथुर। हाडोती अंचल ब्यूरो प्रमुख: अर्जुन देव चद्दा, कोटा। प्रबन्धक:धर्मपाल। E-Mail:vicklangmanch@ymail.com / vicklangmanch@gmail.com

यस बैंक ने जयपुर फुट के लिए दिये 20 लाख

जयपुर। निजी क्षेत्र के यस बैंक ने जयपुर फुट की निर्माता भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति (बी.एम.वी.एस.एस.) को कार्पोरेट सोशियल रेस्पोन्सीबिलिटी के तहत 19,90,000 रू. का एक चैक भेंट किया। इस राशि से बी.एम.वी.एस.एस. यस बैंक के सौजन्य से 400 विकलांगों को कृत्रिम अंग लगाएगी।

मालवीय नगर स्थित बी.एम.वी. एस.एस. के केन्द्र में बड़ी संख्या में देश भर से आए विकलांगों के समक्ष यस बैंक के ग्रुप एक्सेक्यूटिव वाइस प्रेंसिडेन्ट नीरजा सिंह ने 19,90,000 रू. का चैक भेंट किया। इस अवसर पर सहायक वाइस प्रेंसिडेन्ट अनूप गुरूवुगारी तथा यस बैंक के अन्य अधिकारी भी उपस्थित थे।

वाइस प्रेंसिडेन्ट नीरजा सिंह ने कहा कि यस बैंक सामाजिक सरोकार के जरिए समाज से जुड़ना चाहता हैं। उन्होंने कहा कि जयपुर फुट के उत्तम कार्य को देखते हुए ही यस बैंक जयपुर फुट से जुडा हैं, और यह रिश्ता भविष्य में और मजबूत होगा। नीरजा सिंह ने कहा कि विश्वसनीय बैंकिंग के साथ यस बैंक अपने सामाजिक दायित्व को निभाने के लिए दृढ़ सकंल्प हैं। उन्होने कहा कि भविष्य में जयपुर फुट के सहयोग से यस बैंक और अधिक विकलांगों से जुडेगा और उनके कल्याणार्थ कार्यक्रम चलाएगा। भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति के संस्थापक और मुख्य संरक्षक डी.आर.मेहता ने कहा कि जयपुर फुट की विश्वसनीयता और गुणवत्ता के कारण देश विदेश में मांग बढ़ी है। इस अवसर पर बी.एम.वी.एस.एस. के सयुंक्त सचिव भूपेन्द्र राज मेहता भी उपस्थित थे।

पोलियो ग्रस्त किसान ने नेपाल पीड़ितों को दिये 5000

बड़वानी। मध्यप्रदेश के बडवानी जिले के एक पोलियो ग्रस्त नि:शक्त किसान ने मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की अपील पर नेपाल में भूकम्प त्रासदी झेल रहे लोगों के लिये 5 हजार रूपये की राशि कलेक्टर को दी है। बड़वानी मुख्यालय से 4 किलोमीटर दूर ग्राम करी के नि:शक्त किसान किशोर कुमावत दोनों हाथों के सहारे कलेक्टर कार्यालय पहुंचे। कुमावत ने बताया कि वे कलेक्टर रवींद्र सिंह से मिल कर उन्हें कहा नेपाल त्रासदी हेतु कुछ राशि दान करना चाहते हैं। कलेक्टर सिंह को 5 हजार रूपये की नगद राशि देते हुये कुमावत ने कहा कि उनकी गांव में पान की दुकान व लगभग 8 एकड़ खेती है। वे 5 हजार से ज्यादा राशि देना चाहते थे किन्तु बेचे गये गल्ले के भुगतान में हो रहे विलम्ब के कारण उन्होंने अभी इतनी ही राशि देने का निश्चय किया है। कुमावत का एक मात्र पुत्र इन्दौर में उच्च शिक्षा ले रहा है। वे नि:शक्त होने के बाद भी कार स्वयं चलाते हैं।

एक शाम विशेष योग्यजन के नाम

शिक्षा एवं कौशल विकास को बढ़ावा देना जरूरी:किरण माहेश्वरी

राजसमंद। जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी एवं भूजल मंत्री माननीया किरण माहेश्वरी ने कहा कि विशेष योग्यजन की शिक्षा के साथ-साथ उनके व्यवसायिक कौशल विकास पर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। जिससे वे समाज की मुख्यधारा से जुड़कर समग्र विकास में भागीदार बन सके।

श्रीमती माहेश्वरी श्री द्वारकेश अक्षम सेवा संस्थान द्वारा संचालित जागृति उच्च माध्यमिक विशिष्ट विद्यालय के 11वें स्थापना दिवस समारोह सांस्कृतिक संध्या 'एक शाम विषेष योग्यजन के नाम' में मुख्य अतिथि के रूप में विचार व्यक्त कर रही थी। समारोह के विशिष्ट अतिथि राजसमन्द नगर परिषद के उपसभापति अर्जुन मेवाड़ा, जेके टायर के उपाध्यक्ष (वर्क्स) एल पी श्रीवास्तव, महा प्रबन्धक अनिल मिश्रा, समाज सेवी बाबूलाल कोठारी, संजय अग्रवाल, जयपाल थे।

श्रीमती माहेश्वरी ने कहा कि विशेष योग्यजन के साथ संवेदनशील होकर कार्य करने की आवश्यकता है। ऐसे में प्रत्येक परिवार को मन, वचन एवं कर्म से इनके विकास में लगे लोगों एवं संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करना होगा। उन्होंने आश्वस्त किया कि संस्था ने मेहनत एवं लगन से बच्चों में उत्साह-उमंग का संचार किया है हम सब मिलकर संस्था को आवंटित भूमि पर भवन बना इनके कौशल विकास में भी भागीदार बनेंगे।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में संस्थाध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने संस्था के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए संस्था भवन निर्माण प्रोजेक्ट की जानकारी दी। संस्थापक सचिव राकेश परियानी ने गत दस वर्षो की की जानकारी देते हुए कहा कि वर्तमान में यहाँ 80 विशेष बालक-बालिकाएँ अध्ययनरत् एवं 26 विशेष बच्चों को आवासीय सुविधा प्रदान की गयी है। जबकि आज भी 150-200 बच्चे भवन की सीमितता व वित्तीय समस्याओं के कारण शिक्षा से वंचित है और अब समय के साथ अधिक संसाधन जुटाने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संयोजन नरेन्द्र कुमार शर्मा ने किया। कार्यक्रम के अन्त में श्रीमती किरण माहेश्वरी द्वारा सभी बच्चों को उपहार प्रदान किये गये। बाबूलाल शर्मा द्वारा आभार प्रकट कर कार्यक्रम समापन किया गया।

तीन गिलास से अधिक दूध पीने वालों में हड्डी टूटने का खतरा अधिक

लंदन। वैज्ञानिकों के नये शोध में चौंकाने वाली बात सामने आयी है कि प्रति दिन तीन गिलास से अधिक दूध सेवन करने वाले व्यक्तियों में हड्डी टूटने का खतरा इससे कम पीने वालों की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक होता है।

ब्रिटेन की मेडिकल पत्रिका के ताजा अंक में प्रकाशित रिपोर्ट में यह तथ्य सामने आया है। स्वीडेन में उप्पसाला यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर कार्ल निक्लसन के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक टीम ने वर्ष 1987 से 1990 तक 61 हजार 400 महिलाओं और वर्ष 1997 में 45 हजार तीन सौ पुरूषों के दूध और उससे बनी चीजों के खाने की आदत पर निगरानी रखने के बाद उनके स्वास्थ्य का करीब 20 साल तक अध्ययन किया। महिला और पुरुषों को एक प्रश्नावली दी गयी थी जिसमें उनसे पूछा गया कि एक साल में उन्होंने कितनी बार दूध, दही एवं चीज का सेवन किया। उनसे यह भी पुछा गया कि साल में कितनी बार हड्डी टूटने की घटनाएं हुयी। इस शोध में यह भी ध्यान रखा गया है कि प्रतिभागियों में कितने लोगों की इस दौरान मौत हुयी। डाक्टरों की टीम ने पाया कि दूध लेने वालों में मौत का प्रतिशत भी अधिक रहा। डाक्टरों के अनुसार प्रतिदिन तीन गिलास अथवा इससे अधिक दूध पीने वालों की जिन्दगी भी छोटी रही। इसके साथ ही इतनी ही मात्रा में दूध का सेवन करने वाली महिलाओं की हड्डी टूटने का खतरा भी इससे कम सेवन करने वालों की तुलना में 50 प्रतिशत अधिक रहा। डाक्टरों के अनुसार दूध की तुलना में दही का इस्तेमाल करने वाले लोगों में हड्डियों के टूटने अथवा उससे संबंधित किसी तरह की बीमारी की घटना कम हुयी।

निवेदन है
प्यारे दोस्तो,
गरमी बढ़ने लगी है, प्रत्येक वर्ष हज़ारों पंछी प्यास के कारण मर जाते है अतः आप से निवेदन है कि अपने घर की छत या दीवार पर एक पानी का बरतन ज़रूर रखे ताकि प्यासे पंछी अपनी प्यास बुझा सके !
आपको मन की शांति मिलेगी.

सौजन्य : आशादीप संस्थान, जयपुर

11वां आर्य परिवार युवक युवती परिचय सम्मेलन सम्पन्न

आर्य परिवारों में परस्पर विवाह से होगा आर्यत्व का विकासः धर्मपाल आर्य

कोटा। आर्य परिवारों के बीच वैवाहिक रिश्तों की डोर जोड़ने की सार्थक पहल के तहत 11वें आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का आयोजन 3 मई को आर्य समाज विवेक विहार नई दिल्ली पर किया गया।

सम्मेलन से कोटा लौटकर कार्यक्रम के राष्ट्रीय संयोजक तथा आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि अब तक के सम्मेलनों के माध्यम से 450 रिश्ते हो चुके हैं। ये सम्मेलन युवाओं और नई पीढी को आर्य विचार से जोड़ने की अच्छी पहल है। उन्होंने कहा कि यह श्रेष्ठ प्रयास है, और इसमें काफी सफलता भी मिल रही है। दिल्ली के बाहर यूपी, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश से प्रतिभागियों का आना इसकी सफलता की पुष्टि करता है।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि नई दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य थे। विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली के महामंत्री राजीव आर्य व उपप्रधान सुरेन्द्र रेली थे। वहीं गजेन्द्र सक्सेना, अर्जुनदेव चड्ढा, श्रीमती बीना आर्य, श्रीमती उषा किरण आर्या, श्रीमती विभा आर्या, सतीश चड्ढा ने दीप प्रज्ज्वलन किया। सम्मेलन का शुभारंभ ईश्वर की स्तुति व मंत्रोच्चारण के साथ किया गया। धर्मपाल आर्य ने संबोधित करते हुए कहा कि आर्य परिवारों में परस्पर विवाह से आर्यत्व का विकास होगा। आर्य समाज की विचारधारा का सहज पल्लवन होगा। महर्षि दयानन्द के वैदिक मन्तव्य के अनुरूप परिवारों का निर्माण होगा, यह दूरगामी कदम है।

राजीव आर्य ने कहा कि समाज का यह अनुकरणीय आयोजन है। इससे समान गुण के स्वभाव वालों के बीच विवाह की महर्षि की मान्यता कार्यान्वित होती दिखाई दे रही है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट लिखा है कि प्रत्येक युवक युवती को गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार ही अपने जीवनसाथी का चयन करना चाहिए। नई दिल्ली के उप प्रधान शिवकुमार मदान ने कहा कि दिल्ली सभा के द्वारा समाजसेवा का सात्विक कार्य है। युवक युवतियों के समान विचारधारा वाले के साथ विवाह का अवसर मिलना चाहिए। इससे गृहस्थ जीवन में संस्कार विकसित होते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री अरूण वर्मा ने कहा कि आर्य समाज दहेज और जातिवाद दोनों का सख्त विरोधी है। आर्य परिवारों का वैवाहिक परिचय सम्मेलन इनके विरोध में एक क्रांतिकारी कदम है।

आधुनिक जीवन शैली हड्डियों पर पड़ रही है भारी

नयी दिल्ली। चारों तरफ शीशे से बंद पूर्णत: एयरकंडीशनिंग वाले घर और दफ्तर भले ही आरामदायक महसूस होते हों लेकिन ये आपकी हड्डियों को खोखला बना रहे हैं।

आधुनिक जीवन शैली की प्रतीक माने जाने वाले ऐसे घर और दफ्तर न केवल ताजी हवा बल्कि धूप से वंचित करते हैं जिसके कारण शरीर में विटामिन डी की कमी होती है और हड्डियां कमजोर होती हैं।

इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल के वरिष्ठ अस्थि शल्य चिकित्सक डा. राजू वैश्य ने देश के अलग-अलग शहरों में जोड़ों में दर्द एवं गठिया (आर्थराइटिस) के एक हजार मरीजों पर अध्ययन करने पर पाया कि ऐसे मरीजों में से 95 प्रतिशत मरीजों में विटामिन डी की कमी है ओर इसका एक मुख्य कारण पर्याप्त मात्रा में धूप नहीं मिलना है जो विटामिन डी का मुख्य स्रोत है। डा. राजू वैश्य ने बताया कि दरअसल विटामिन (डी) का मुख्य स्रोत सूर्य की रोशनी है जो हड्डियों के अलावा पाचन क्रिया में भी बहुत उपयोगी है। व्यस्त दिनचर्या और आधुनिक संसाधनों के कारण लोग तेज धूप सहन नहीं कर पाते। सुबह से शाम तक आधुनिक ऑफिसों में रहते हैं। खुले मैदान में घूमना-फिरना और खेलना भी बंद हो गया। इस कारण धूप के जरिए मिलने वाला विटामिन उन तक नहीं पहुंच पाता। जब भी किसी को घुटने या जोड़ में दर्द होता है तो उसे लगता है कैल्शियम की कमी हो गई। विटामिन डी की ओर ध्यान नहीं जाता। डा. वैश्य का कहना है अगर कैल्शियम के साथ-साथ विटामिन (डी) की भी समय पर जांच करवा ली जाए। तो आर्थराइटिस को बढ़ने से रोका जा सकता है। आमतौर पर माना जाता है कि आर्थराइटिस (गठिया रोग) की मुख्य वजह कैल्शियम की कमी है लेकिन ऐसा नहीं है। विटामिन (डी) की कमी भी इसकी बड़ी वजह है।

उन्होंने कहा कि भारतीय लोगों में विटामिन डी की कमी का एक कारण यह भी है कि सांवली रंग की त्वचा धूप को कम अवशोषित करती है जबकि गोरी रंग की त्वचा धूप को अधिक अवषोशित करती है। इस कारण से गोरी रंग के त्वचा वाले लोग कम समय भी धूप में रहें तो विटामिन डी की कमी पूरी हो जाती है। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि अमरीका एवं अन्य विकसित देशों में लोग आहार के साथ विटामिन डी एवं कैल्शियम के सप्लीमेंट भी लेते हैं इस कारण वहां लोगों को विटामिन डी एवं कैल्शियम की कमी पूरी हो जाती है, जबकि हमारे देश में ऐसा नहीं है।

पत्रकारों में गिरती संवेदनशीलता चिंता का विषय

चित्तौडगढ़। पत्रकारिता में साहित्य एवं कला के अभाव के साथ संवेदनशीलता भी खत्म हो रही है। ये विचार आज यहां नारद जयन्ति पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचार विभाग के तत्वावधान में आयोजित विचार गोष्ठी में प्रमुख रूप से उभरे। गोष्ठी के मुख्य वक्ता संघ के महेंद्र सिंह सिसोदिया ने कहा कि पत्रकारिता में आज केवल खबरें रह गई है, खबर के आगे पीछे क्या है इसका विश्लेषण गौण हो गया है। पत्रकारिता से आज साहित्य एवं कला भी समाप्त हो गई है। गोष्ठी के मुख्य अतिथि सभापति सुशील शर्मा ने कहा कि पत्रकार समाज के पथ प्रदर्शक है और उन्हें समाज एवं राष्ट्रहित में कड़वी बात कहने से भी नहीं हिचकिचाना चाहिए। उन्होंने उपस्थित पत्रकारों से आव्हान किया है कि अगले वर्ष नारद जयन्ति को पत्रकार दिवस के रूप में आप हम मिलकर वृहद स्तर पर मनाएं। विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय उपाध्यक्ष वैद्य लक्ष्मीनारायण जोशी ने कहा कि आज टेलीविजन के माध्यम से संस्कृति के पतन का कुचक्र चल रहा है जिसे रोकना पत्रकारों के वश में है। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को देवर्षि नारद के आदर्शों पर चलना चाहिए। इस अवसर पर शहर के पत्रकारों का अभिनंदन भी किया गया।

चढ्ढा को उल्लेखनीय समाज सेवा के लिए महाशय धर्मपाल ने दिया आशीर्वाद

कोटा। आर्य समाज के 93 वर्षीय शिरोमणी महाशय धर्मपाल आर्य (चैयरमेन एम.डी.एच.) ने कोटा के वरिष्ठ समाजसेवी व आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चढ्डा को समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने पर आर्शीवाद दिया है। अर्जुनदेव चड्ढा ने दिल्ली स्थित महाशय धर्मपाल जी के

कार्यालय पर उनसे मुलाकात की तब महाशय जी ने कहा कि मैं आर्य समाज की पत्र पत्रिकाओं में तुम्हारे द्वारा की जा रही समाजसेवा के समाचार पढ़ता रहता हूं। मुझे प्रसन्नता है कि आर्य समाज के सेवा कार्यों को आप आगे बढ़ा रहे हो। महाशय जी ने चढ्डा को अपने पास बिठाया व सिर पर हाथ रखकर व माथा चूमकर आर्शीवाद दिया।

बेटी के नहीं हैं दोनों हाथ, मां ने पेंटिंग करना सिखाया, बेटी ने बनाया वर्ल्ड रिकॉर्ड

रायपुर। दामिनी कक्षा 11वीं की छात्रा उम्र तकरीबन 17 साल बिरगांव में जब दामिनी पैदा हुई तो जन्म से ही हाथ नहीं थे। परिवार में कहा गया, बेटी अशुभ है, क्योंकि हाथ नहीं है। एक तरफ दामिनी पर कुदरत की बिजली गिरी थी तो दूसरी तरफ समाज के ताने। मां माधुरी ने खुद को संभाला और संकल्प लिया कि जो भी होए बेटी दुनिया में नाम करेगी। मां की शक्ति ने बेटी दामिनी को ऐसा हुनर सिखाया कि आज उसने गोल्डन बुक आफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज करा लिया। मां माधुरी और बेटी दामिनी पर आज पूरे परिवार को फक्र है। मां माधुरी सेन कहती हैं कि बुरा ये नहीं लगा कि बेटी ऐसी हुई, बुरा ये लगा कि ऐसी होते ही उसे अशुभ बोल दिया। ये कैसी दुनिया, कैसा समाज है।

मां भी पैरों से सिखती थी, फिर सिखाती थी

दामिनी के नाम एक घंटे में पैर से 38 पेंटिंग बनाने का रिकॉर्ड दर्ज है। 2015 में ही ये रिकॉर्ड उसने बनाया है। दामिनी कहती है कि मेरे हाथ नहीं थे तो मां ने भी शायद तय कर लिया कि वो अपने हाथ का इस्तेमाल मुझे कोई काम सिखाने में नहीं करेंगी। इस कारण सारे काम पहले पैर से वो खुद करती और उसके बाद मुझे सिखाती। ए, बी, सी, डी लिखने से लेकर क, ख, ग और अंकों की सारी तालीम मैंने मां के कदमों से सीखी। इसके बाद रेखाओं और रंगों की भाषा भी पैरों के जरिए मुझे मां ने ही सिखाई। जो भी रिकॉर्ड बनाए मां की बदौलत बना। पैरों से सिखाते-सिखाते उनकी कपड़े गंदे हो जाते थे। किसी जगह मैंने पढ़ा था, तेरे दामन में सितारे हैं तो होंगे ऐ फलक, मुझको अपनी मां की मैली ओढ़नी अच्छी लगी...। और वाकई मेरी दुनिया मेरी मां के आंचल से शुरू होती है और उनके कदमों में खत्म।

रोजगार से जुड़े 41 नि:शक्त युवा

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान की ओर से नि:शक्तजनों के लिए चलाए जा रहे नि:शुल्क स्वरोजगार परक प्रशिक्षणों के क्रम में मंगलवार को 45 दिवसीय मोबाईल व आईसीआईसीआई स्वरोजगार उद्यमिता संस्थान के सहयोग से चल रहे 35 दिवसीय सिलाई प्रशिक्षण बैच का समापन हुआ। इनमें भाग लेने वाले 41 प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। सिलाई बैच के सभी 21 प्रशिक्षणार्थियों को सिलाई मशीन तथा टूल किट प्रदान किए गए। इस अवसर पर संस्थान निदेशक श्रीमती वन्दना अग्रवाल परियोजना प्रभारी यशोदा पणिया व आईसीआईसीआई स्वरोजगार उद्यमिता संस्थान की सुश्री शानु सिंह, मनप्रित सिंह व रेखा भी उपस्थित थी।

असहाय महिलाओं को राशन वितरण

नारायण सेवा संस्थान के सेक्टर 4 स्थित मानव मन्दिर परिसर प्रांगण में संस्थान संस्थापक पदमश्री कैलाश 'मानव' के मार्गदर्शन में संस्थान निदेशक श्रीमती वन्दना अग्रवाल ने 540 निर्धन, विधवा, वृद्ध और नि:शक्त महिलाओं को एक माह का नि:शुल्क राशन वितरण किया। राशन में 10 कि.ग्रा. आटा, 2 कि.ग्रा. दाल, 1 कि.ग्रा. तेल, 2 कि.ग्रा. चावल, 2 कि.ग्रा. शक्कर, आधा कि.ग्रा. मिर्ची व 1 कि.ग्रा. नमक प्रदान किया गया।

नेत्रहीन और बिना हाथ वाले दोस्तों ने बंजर भूमि में उगा दिए 12000 पेड़

ये है दोस्तों की अजब-गजब जोड़ी। एक नेत्रहीन और एक बिना हाथ वाला। पर इस जोड़ी ने जो काम किया है वो समर्थ लोगों के लिए भी प्रेरणादायी है। इन दोनों दोस्तों ने मिलकर चीन के येली गांव में बंजर पड़ी भूमि को हरा-भरा जंगल बना दिया है। यहां इन दोस्तों ने एक-दो नहीं, 12000 पेड़ लगाएं हैं।

ये पेड़ एक ही दिन में नहीं लगाए बल्कि पिछले 13 साल से ये दोस्त पेड़ लगा रहे हैं और उन्हें बड़ा करने के लिए मेहनत कर रहे हैं। बिना हाथ वाले 53 साल के जिया वैंकी और उनके नेत्रहीन दोस्त 54 वर्षीय जिया हैक्सिया ने ना केवल पेड़ लगाए बल्कि वे बड़े हों इसके लिए एक नहरा से सिंचाई भी की। शुरूआत में लोगों को लगा कि वे ये काम व्यवसाय खड़ा करने के लिए कर रहे हैं, लेकिन जब लोगों को पता चलाए तो उन्होंने उनकी मदद भी की। वैंकी ने एक इंटरव्यू में बताया कि यह जमीन कई सालों से सूखी और कंकरीली पड़ी थी। कोई सामान्य आदमी के लिए भी यहां पेड़ उगाना असंभव था। लेकिन जैसा कि कहा जाता है कि जहां चाह वहां राह। वही हुआ। रोज सुबह हैक्सिया अपने मित्र की शर्ट की बांह पकड़ कर पीछे-पीछे चलता है और इस तरह दोनों नदी के किनारे लगे पेड़ों तक पहुंचते हैं। हाथ नहीं होने के बावजूद भी वैंकी कंधे और गर्दन के बीच औजार फंसाकर पेड़ उगाने के लिए खड्डा खोदता है। वह अपने पैरों से नदी में से पानी भी भर लाता है। काम करने में असमर्थ ये दोनों दोस्त 2002 में इस काम में लगे। तब इनका लक्ष्य एक साल में 800 पेड़ लगाने का था। लेकिन उनकी पहली ही फसल सूखे की चपेट में आ गई लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी।

इस गांव की आधी आबादी विकलांग नहीं कर सकते कोई काम

इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)। फतेहपुर जिले के कई गांव का भूमिगत जल विषातन्त हो जाने के चलते लोग विकलांगता का शिकार होकर रह गए है। सबसे बुरे हालात तो जिले के भिटौरा विकास खण्ड के चौहट्टा गांव के है। जहां गांव की आधी से ज्यादा आबादी पूरी तरह से विकलांग हो गई है। हालात ये है कि लोगों को अपने पैरों पर चल पाना दुभर हो गया है।

सालों पहले शुरू हुई इस समस्या की जानकारी मिलने के बाद प्रशासन द्वारा गांव में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए गांव में नलकूप भी लगाए गए, लेकिन जल निगम द्वारा किया गया यह प्रयास भी शुद्ध पेयजल के लिए तरस रहे लोगों के लिए नाकाफी साबित हुआ है। आए दिन नलकूप में आने वाली खराबी और गांव में पर्याप्त विद्युत आपूर्ति न होने के चलते यहां के लोग अब भी दूषित पेयजल पीने को मजबूर है।

जहरीले हो चुके इस गांव के भूमिगत जल के कारण गांव के कई लोग असमय मौत का शिकार हो चुके है। मौजूदा हालत यह है कि गांव के तमाम बच्चे अपने पैरों पर खड़े होने के पहले विकलांग हो गए। गांव की गरीबी और विकलांग होती पूरी पीढ़ी के चलते इस गांव के लोग न तो मजदूरी कर पा रहे है और न ही अपने खेतों में काम पूरी तरह से बेकार हो जाने के चलते तमाम परिवारों के पास खाने के लिए दो जून की रोटी का संकट खड़ा हो गया है। सरकार लोगों को बेहतर जीवन उपलब्ध कराने का सपना भले ही दिखाती हो, लेकिन जब शुद्ध पेयजल ही नहीं मिल पा रहा है। ऐसे मे सरकारी दावें कितने सच है इसका अंदाजा आसानी से लगाया जा सकता है।

आँध्रा बैंक का मुनाफा 110 प्रतिशत बढ़ा

हैदराबाद। सार्वजनिक क्षेत्र के आँध्रा बैंक का शुद्ध मुनाफा 31 मार्च को समाप्त वित्त वर्ष की चौथी तिमाही में 110.31 प्रतिशत बढ़कर 185.24 करोड़ रुपये पर पहुँच गया है। वित्त वर्ष 2013-14 की समान तिमाही में यह 88.08 करोड़ रुपये रहा था। बैंक के निदेशक मंडल की आज यहाँ हुई बैठक के बाद

जारी परिणामों के अनुसार आलोच्य अवधि में उसकी कुल आय 4057.89 करोड़ रुपये के मुकाबले 15.80 फीसदी बढ़कर 4699.16 करोड़ रुपये पर पहुँच गयी है। इस दौरान बैंक की सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) 5.29 प्रतिशत से बढ़कर 5.31 प्रतिशत पर पहुँच गयी जबकि शुद्ध एनपीए 3.11 फीसदी से घटकर 2.93 फीसदी रह गया है। वार्षिक आधार पर बैंक का शुद्ध लाभ 46.57 प्रतिशत बढ़कर 638.44 करोड़ रुपये पर तथा कुल राजस्व 14.32 प्रतिशत बढ़कर 17868.45 करोड़ रुपये पर पहुँच गया। निदेशक मंडल ने पिछले वित्त वर्ष के लिए 20 प्रतिशत लाभांश को भी मंजूरी दी है।

इमोशनल

स्टीफन हॉकिंग की प्रोफेसर बेटी लूसी ने कॉलमनिस्ट कैटी हॉपकिन्स को भावुक पत्र लिखकर अनुरोध किया... पढ़िए शब्दशः

प्रिय कैटी, नि:शक्तों की जिंदगी को ज्यादा मुश्किल मत बनाओ

एजेंसी तंदन

प्रिय कैटी हॉपकिन्स,

मैं तुम्हें पत्र लिख रही हूं, आदर के साथ नहीं लेकिन विनम्रता के साथ। तुम्हें रोकने के लिए।

मैंने चुनाव लड़ रहे एडवर्ड मिलिबैंड को लेकर दिए गए तुम्हारे कमेंट्स पढ़े। जिसमें तुमने उन्हें ऐसा व्यक्ति बताया जैसे कोई स्पेक्ट्रम पर हो। मैं हाल ही में ऑस्ट्रेलिया ट्रिप पर से लौटी हूं। मैं वहां अपने पिता स्टीफन हॉकिंग के एक शो में प्रेजेंटर के तौर पर वहां गई थी। (मुझे लगता है मेरे पिता को तुम जानती ही हो, उनका परिचय देने की जरूरत तो नहीं है।) सिडनी के ऑपेरा हाउस में इस लाइव शो का आयोजन किया गया था। जहां तक मुझे पता है नि:शक्तजनों के प्रति मेरा नजरिया ही बदल गया था। जब मैंने अपने पापा को इस दुर्लभतम नि:शक्तता के साथ पाया था। बात 1970 की है तब मैं बच्ची थी। हम दोनों इस पर खुलकर बात करते थे। जब कहीं बाहर जाते थे तब भी। हमें बहुत सारी मुश्किल परिस्थितियों को सामना करना पड़ता था।

एक बार एक रेस्टोरेंट में मैनेजर ने हमें लंच पूरा होने से पहले ही उठाकर बाहर कर दिया। वजह थी दूसरे लोगों को हमसे परेशानी हो रही थी। वास्तव में यह ऐसा दौर था जब मुझे आप जैसे लोगों के बीच बड़ा होना पड़ रहा था। हर

जगह। हर समय। अब बात सिडनी की। सिडनी के इवेंट का जिक्र मैंने इसलिए किया कि अब किसी भी नि:शक्त को इस तरह के हमलों का सामना नहीं करना पड़ेगा और उन्हें पूरा सम्मान और गरिमा दी जाएगी। यू-ट्यूब पर यह वीडियो मौजूद है। तुम देख सकती हो कि दर्शक वहां कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। और तभी मैंने भारी मन से मिलीबैंड पर तुम्हारे जोक पढ़े (पता नहीं वो जोक थे भी या नहीं, मैं भी नहीं जानती)।

मेरा बेटा ऑटिस्टिक है। वह बहुत ही सौम्य, शालीन, मेहनती और बहुत-बहुत प्यारा है। लेकिन कई बार वह लोगों को घूरता है। मैं जब कभी भी ट्रेन में सफर करती हूं तो लोगों को बता देती हूं कि वह ऑटिज्म से पीड़ित है। ऑई एम सॉरी, अगर वह आपको घूरकर देख रहा है। लोगों की प्रतिक्रियाएं नम्र और सहानुभूति से भरी होती हैं।

लेकिन, मुझे लगता है कि अगर वह तुम्हें घूरे तो! तो, बिल्कुल भी अच्छा नहीं होगा, तुम मजाक उड़ाओगी। तुम उसकी नि:शक्तता का इस्तेमाल उसी के खिलाफ करोगी। तुम्हें बिल्कुल फिक्र नहीं होगी वह कितना शर्मिंदा, दुखी होगा उसे कितनी चोट लगेगी? क्योंकि यह तुम्हारे लिए मायने ही नहीं रखता। तुम्हें नहीं लगता कि ऑटिस्टिक बच्चों की जिंदगी वैसे ही तकलीफदेह होती है। इसे और बदतर क्यों बना रही हो? शायद तुम उनसे कहना चाहती हो कि वे समाज के लिए फिट नहीं हैं? मुझे नहीं पता, संकुचित और तल्खी भरे विचार रखने के लिए तुम्हें कितने पैसे मिलते हैं? निश्चित रूप से पर्याप्त नहीं होंगे। जल्द ही मीडिया तुम्हें सुखिंयों से दूर कर देगा। तुम हाशिए पर होगी। और नफरत की लहर के साथ तुम्हें अपने हाल पर छोड़ दिया जाएगा।

ईमानदारी से कहूं- मुझे बिल्कुल फर्क नहीं पड़ता, तुम्हारा क्या होगा? लेकिन मुझे चिंता नि:शक्तों और उनके परिजनों की है। मुझे लग रहा है कि तुम उनकी जिंदगी को ज्यादा चुनौतीपूर्ण बना रही हो। प्लीज रोक दो ये सब।

(लूसी ने यह पत्र इसलिए लिखा क्योंकि कैटी ने मिलिबैंड का मजाक उड़ाया।)

अंबुजा ने वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह पर कर्मचारी जुड़ाव पहल का आयोजन किया

जयपुर। अंबुजा सीमेंट लिमिटेड ने वैश्विक सड़क सुरक्षा सप्ताह के अवसर पर कर्मचारी जुड़ाव पहल का आयोजन किया। इसका उद्देश्य कर्मचारियों और उनके बच्चों को सड़क सुरक्षा की जरूरत के विषय में शिक्षित करना था। प्रोग्राम के हिस्से के तौर पर, अंबुजा के राब्रियावास संयंत्र में चित्रकला प्रतियोगिताओं, क्विज, नाटक और डॉक्यूमेंटरी सत्रों का संचालन किया गया।

इस पहल पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये अजय कपूर, प्रबंध निदेशक एवं सीईओ, अंबुजा सीमेंट्स लिमिटेड ने कहा कि अंबुजा सीमेंट के कार्य सिद्धान्त में स्वास्थ्य एवं सुरक्षा हमेशा प्रमुख केन्द्र में रहा है। परिणामस्वरूप, हम न सिर्फ अपने कर्मचारियों बल्कि अन्य हितधारकों की भी, जो हमसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुये हैं, की सुवेच्छा को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रोग्राम्स और पहलों का संचालन करते रहते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक सड़क सुरक्षा अभियान और इसकी सेव किड्स लाइव्स पहल के अनुरूप, हमें बच्चों तक भी अपनी जागरुकता पहुंच विस्तारित करने में मदद मिली है। आज देश के हजारों बच्चे प्रतिवर्ष सड़क दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं। इसलिए, बच्चों में भी सुरक्षा का पूर्वाग्रह विकसित करना महत्वपूर्ण है। ऊपर दी गई विभिन्न पहलों के माध्यम से, हम बच्चों में आवश्यक सड़क सुरक्षा शिष्टाचार का समावेश करना चाहते हैं। हमें उम्मीद है कि भविष्य में यह शिष्टाचार बच्चों के लिए सेफ्टी ऐम्बेसेडर बनने में मदद करेंगे।

राब्रियावास, राजस्थान में अंबुजा ने कर्मचारियों और उनके बच्चों को सड़क सुरक्षा के महत्व के विषय में शिक्षित करने और सशक्त बनाने के लिए विभिन्न पहलों का शुभारंभ किया। इसके अतिरिक्त, सुरक्षा की दिशा में संज्ञानात्मक अभ्यास और बेहतर संवेदनशीलता बढ़ाने के लिए भी सत्र संचालित किये गये। इन्हें सुरक्षा उपकरणों के इस्तेमाल के लाइव निरूपण, सुरक्षा के महत्व पर सत्र, यातायात नियम और कायदों पर खेल के माध्यम से संचालित किया गया। सभी गतिविधियां संयुक्त राष्ट्र के वैश्विक सड़क सुरक्षा अभियान- सेव किड्स लाइव्स के अनुरूप थीं।

चंद्रपुर-महाराष्ट्र, अंबुजानगर-गुजरात, राब्रियावास- राजस्थान, भाटपारा-छत्तीसगढ़ और रोपर- पंजाब में स्थित अंबुजा के संयंत्रों में सेव किड्स लाइव्स कर्मचारी पहल का भी आयोजन किया गया।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र ने जयपुर जोनल कार्यालय के नये परिसर का शुभारंभ किया

जयपुर। बैंक ऑफ महाराष्ट्र, मध्यम आकार के सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक ने अपने जयपुर जोनल कार्यालय के नये परिसर का उद्घाटन किया। जयपुर जोनल कार्यालय के नये परिसर का उद्घाटन सुशील मुहनोत-बैंक के माननीय चेयरमैन और प्रबंध निदेशक द्वारा किया गया। वहां एकत्रित लोगों को संबोधित करते हुये माननीय सीएमडी ने कहा कि बैंक प्रगति कर रहा है और अनेक खोजपरक योजनायें बैंक को और आगे बढ़ायेंगी। बैंक अपने ग्राहकों को बेहतर सेवायें देने के लिए वचनबद्ध है। जयपुर जोनल कार्यालय का नया परिसर अब छठी मंजिल, फॉर्च्यून हाइट्स, अहिंसा सर्कल, मेन सुभाष मार्ग, जयपुर स्थानांतरित कर दिया गया है। इसी दिन, बैंक के माननीय चेयरमैन और प्रबंध निदेशक सुशील मुहनोत ने उस अभियान में भी भागीदारी की जिसे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाइ) और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाइ) से संबंधित जीओआई के दिशानिर्देशों पर बैंक द्वारा शुरू किया गया है। उन्होंने लाभार्थियों को अभिस्वीकृति रसीद प्रदान की, जिन्होंने उपरोक्त बीमा योजनाओं के लिए आवेदन किया था। एच.एन. श्रीवास्तव जोनल मैनेजर, जयपुर जोन ने राजस्थान में अपने शाखा नेटवर्क और अन्य सुविधाओं के माध्यम से अपने ग्राहकों को गुणवत्तापूर्ण सेवायें प्रदान करने की प्रतिबद्धता को दोहराया।

सुदर्शन कुमार वधवा पीएनबी के नए फील्ड महाप्रबन्धक

जयपुर। सुदर्शन कुमार वधवा ने पंजाब नैशनल बैंक के नेहरु प्लेस स्थित महाप्रबन्धक कार्यालय में महाप्रबन्धक के रूप में कार्यभार संभाल लिया है। वधवा राजस्थान राज्य में बैंक के प्रभारी रहेंगे तथा अलवर, भरतपुर, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर एवं श्रीगंगानगर मण्डल इनके निर्देशन में कार्य करेंगे। इससे पहले वधवा मुरादाबाद मंडल के मंडल प्रमुख थे।

कामधेनु इस्पात लिमिटेड की सीएसआर शाखा कर रही ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम में सहयोग

नई दिल्ली। कामधेनु समूह कंपनी की विभिन्न सीएसआर गतिविधियों के अंग के रूप में अपने ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत राजस्थान में अलवर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित 'राजकीय प्राथमिक विद्यालय भुडाली' को प्रायोजित कर रहा है। कामधेनु की सीएसआर गतिविधियों का संचालन करने वाली कामधेनु जीवन धारा के माध्यम से चल रहे समूह के ग्रामीण शिक्षा कार्यक्रम का लक्ष्य ग्रामीण भारत में गरीब छात्रों को प्राथमिक से लेकर उच्च स्तर तक शिक्षा प्राप्त करने में सहायता करना तथा इस प्रकार इन स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास में योगदान करना है।

इस कार्यक्रम के अंतर्गत कामधेनु विभिन्न सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे गरीब परिवारों के छात्रों को पठन सामग्री एवं अन्य स्टेशनरी सामग्री उपलब्ध कराती रही है। 'राजकीय प्राथमिक विद्यालय भुडाली' में गतिविधियां भी उसी प्रक्रिया का हिस्सा हैं, जहां सभी पाठ्यपुस्तक, नोटबुक, जियोमेट्री बॉक्स, पेंसिल, पेन जैसी पठन सामग्री और स्कूल यूनिफॉर्म, कपड़े, जूते, स्कूल बैग तथा लंच बॉक्स दिए गए हैं। स्वच्छ भारत अभियान के विचार के अनुरूप स्कूल में छात्रों के लिए शौचालय बनवाने, खराब हैंड पंप तथा जरूरी फर्नीचर की मरम्मत कराने के लिए राशि भी दी गई है।

श्रीमती राधा अग्रवाल, चेयरपर्सन - कामधेनु जीवन धारा ने कहा, ये कार्यक्रम समाज के जरूरतमंद वर्ग के छात्रों की त्वरित शैक्षिक जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार किए गए। वास्तव में राजकीय प्राथमिक विद्यालय भुडाली के छात्रों के साथ काम की यह शुरुआत भर है और हम कई प्रकार के अभियान यह सुनिश्चित करने के लिए चलाएंगे कि सभी छात्र अपनी शिक्षा पूरी करें, पढ़ाई न छोड़ें और उच्च शिक्षा लेने जाएं।

छात्रों के पास शिक्षा सामग्री और स्कूल यूनिफॉर्म की कमी देखते हुए अभी तक प्राथमिक कक्षाओं के 70-80 छात्रों को ऐसी सहायता प्रदान की गई है। यह सामग्री मिलने से छात्रों को अपनी शिक्षा बेहतर तरीके से जारी रखने में मदद मिलेगी।

बच्चा हकलाए तो ना करें चिंता, अपनाएं ये उपाय

जब बच्चा एक ही अक्षर या शब्द को लम्बा खींचता है या कोई वाक्य बोलते समय अचानक किसी अक्षर या शब्द पर अटक जाता है और उसे बार-बार बोलने की कोशिश करता है तो ये हकलाने के लक्षण हो सकते हैं। ऐसा कई बार सामान्य रूप से बातचीत करने वाले बच्चों के साथ बड़ों में भी देखने को मिलता है। यह समस्या भय, शर्म, तनाव, निराशा या आत्मविश्वास डगमगाने की स्थिति में ज्यादा होती है। प्राय: हर सौ में एक व्यक्ति इस दोष से पीड़ित होता है। हकलाहट (स्टैमरिंग) पूरी तरह से मनोवैज्ञानिक समस्या है। बच्चा जब पहली बार स्कूल जाता है तो वह माता-पिता से दूरी के कारण डरने लगता है। असमंजस की स्थिति में उसके चेहरे की मसल्स टाइट होने लगती हैं। ऐसे में बच्चा शब्दों को अटक-अटक कर और लंबा खींचकर बोलने लगता है। धीरे-धीरे यह उसकी आदत बन जाती है। तीन से पांच साल की उम्र के बच्चों में यह समस्या हो सकती है। डॉक्टरों के मुताबिक ऐसे बच्चे शुरूआती दौर से ही ज्यादा भावुक होते हैं। जिन बच्चों में यह दोष पाया जाता है उनमें से पांच फीसदी बिना किसी मदद या इलाज के अपने आप ही ठीक बोलने लगते हैं। हकलाहट बच्चे की भाषा पर अच्छी पकड़ न होने से भी होती है। कई बार डर से भी बोलने की क्षमता प्रभावित होती है। 9-12 साल की उम्र तक बच्चों में यह दोष कम होने लगता है। स्पीच थैरेपिस्ट बच्चे की मन:स्थिति, डर, शर्माना, असहज होना आदि जानने के बाद उसे तनावमुक्त रखने का प्रयास करते हैं। इसके बाद निरंतर अभ्यास के बाद बच्चे के उच्चारण में सुधार होने पर उसके आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

अभ्यास है इलाज

इस दोष को ठीक करने की प्रो.लोंगेशन तकनीक काफी कठिन है क्योंकि यह बच्चे की प्रैक्टिस पर निर्भर करती है। पीडित बच्चे को सिंग-सॉन्ग तरीके से बात करने का अभ्यास कराया जाता है। उन्हीं शब्दों या अक्षरों को बार-बार बुलवाया जाता है जिन्हें बोलने में बच्चे को परेशानी होती है। सामान्यत: 2-3 महीने में बच्चा ठीक हो सकता है।

डॉ. गंगा आर. सिंह, स्पीच थैरेपिस्ट व ऑडियोलॉजिस्ट

विकलांगता को बनाया जीत का हथियार

पुरुषोत्तम शर्मा

सोनीपत। सही कहा है कि अगर हौसले बुलंद हों और इरादा मजबूत, तो फिर विकलांगता भी किसी की राह का रोड़ा नहीं बन सकती, बशर्ते अपने काम को अंजाम देने के लिए अर्जुन सा लक्ष्य हो और चुनौतियों से लोहा लेने का दम। ऐसा ही कुछ साबित किया सोनीपत जिले के बैंयापुर गांव के एक युवा अमित सरोहा ने। जिस स्थिति में पहुंच कर अमित ने देश और परदेस की धरती पर भारत का परचम लहराया, अकसर वैसी स्थिति में लोग निराशा और कुंठा से भर जाते हैं। परंतु ये इस युवा का हौसला ही था कि उसने अपनी विकलांगता

नयी दिल्ली में राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी अमित सरोहा को अर्जुन अवार्ड से सम्मानित करते हुए।

को अपनी जीत का हथियार बनाया और एक के बाद एक उपलब्धि हासिल की। वह भी महज 7 साल के छोटे से अंतराल में। भीम और अर्जुन अवार्ड से सम्मानित अमित सरोहा आज देश के हजारों विकलांग युवाओं के लिए प्रेरणा का जरिया बना है। बेहद साधारण परिवार से संबंध रखने वाले अमित सरोहा के भी दूसरे युवाओं की तरह सपने थे और इन्हें पूरा करने के लिए इच्छा शक्ति भी। लेकिन नियति उससे कुछ ओर ही कराना चाहती थी। 2007 में एक कार दुर्घटना में अमित को स्पाइनल कोर्ड इंजरी हो गई। इसके बाद उसके शरीर का निचला हिस्सा (पैरों वाला भाग) काम करना छोड़ गया। साथ ही दोनों हाथों की उंगलियां भी जवाब दे गईं। एक हृष्ट-पुष्ट युवा बेबस और लाचार की तरह व्हील चेयर पर आ गया। ऐसी स्थिति में किसी की भी हिम्मत जवाब दे जाए, लेकिन अमित ने इस विषम परिस्थिति में ऐसा कर दिखाया कि आज देश और प्रदेश उस पर नाज करता है। इलाज के दौरान अमित को एक विदेशी युवक मिला। वह भी अमित की तरह ही स्पाइनल कोर्ड इंजरी से पीड़ित था। इस युवक की खेल के प्रति ललक देखकर अमित में भी लालसा जगी और उसने व्हीर चेयर रग्बी से अपने खेल करिअर की 2008 में शुरुआत की। हालांकि ये सब इतना आसान नहीं था, लेकिन ये इस युवा की हिम्मत व लग्न ही है कि आज ये देश के नामी पैरा खिलाड़ियों में गिना जाता है।

विकलांगों को सुविधाएं देगा बीसीसीआईः अनुराग ठाकुर

उमेश शर्मा | चंडीगढ़

अब विकलांग भी अपने चहेते क्रिकेटरों को देखने के लिए स्टेडियम जा सकेंगे। बीसीसीआई इस योजना पर काम कर रहा है कि किस तरह से विकलांग लोग आराम से स्टेडियम तक मैच देखने पहुंचे। भास्कर से खास बातचीत में बीसीसीआई के सचिव अनुराग ठाकुर ने बताया कि फैंस क्रिकेट की रीढ़ है और हमारा फर्ज है कि फैंस को वो सब सुविधाएं मिलनी चाहिए ताकी वह आराम से मैच देख सके। इसमें विकलांग लोगों के लिए एक योजना बनाने जा रहे हैं।

अनुराग ठाकुर ने कहा कि कई विकल्पों पर विचार किया जा रहा है जिसमें स्टेडियम के एक हिस्से को सिर्फ विकलांगों के लिए मार्क किया जाना भी शामिल हैं। यही नहीं उन्हें बिना तकलीफ के टिकट मिले और वह आराम से स्टेडियम के उस मार्क किए हिस्से तक पहुंच जाए, इन सभी बातों का भी ध्यान रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि अभी तक भारत में कहीं भी क्रिकेट स्टेडियम में इस तरह की कोई व्यवस्था नहीं है और न ही किसी ने इस बारे में सोचा है।

जयपुर में एक विशेष योग्यजन को ट्राई साईकिल प्रदान करते रोटरी क्लब के पदाधिकारी।

सर्वाइकल कैंसर से होती है हर घंटे आठ महिलाओं की मौत

जलंधर। महिलाओं में तेजी से फैल रहे सर्वाइकल कैंसर से विश्व में 26.4 फीसदी और भारत में हर घंटे आठ महिलाओं की मौत हो जाती है। देश में हर वर्ष चौदह लाख महिलाएं सर्वाइकल की चपेट में आ जाती है जिसकी संख्या अगले दो दशकों में 22 लाख पहुंच जाने की आशंका है।

मोहाली स्थित फोर्टिस अस्पताल के डॉ राजीव बेदी ने बताया कि सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मौतों में भारत सबसे ऊपर है और महिलाओं में यह दूसरी आम बीमारी है। उन्होंने बताया कि सर्वाइकल के अतिरिक्त ब्रैस्ट कैंसर भी महिलाओं में बहुत तेजी से फैल रहा है। सर्वाइकल कैंसर ग्लोबल क्राइसिस कार्ड के कैंसर से जुड़े आंकड़ों अनुसार दुनियाभर में 26.4 फीसदी महिलाएं सर्वाइकल कैंसर से मरती हैं। 70 फीसदी कैंसर 35 से 64 की उम्र में होता है। डॉ. बेदी ने बताया पिछले दस सालों में महिलाएं कैंसर रोगियों संख्या तेजी से बढ़ी है जिसका मुख्य कारण छोटी उम्र में शादी होना, बार बार गर्भवती होना तथा साफ सफाई के बारे में जागरूकता की कमी है। कैंसर से पूरी दुनिया में मृत्यु दर में बढ़ौतरी हुई है। पिछले दस सालों में भारत में कैंसर के मामले में पुरूष-महिला अनुपात 49-51 से 39-51 पहुंच गया है।

चीफ कलरेक्टल सर्जन और गाइनीकोलॉजिकल ऑन्कोलॉजी के डॉ. राजीव कपूर ने बताया कि सर्वाइकल के कोठ विशिष्ट लक्षण नहीं होते। उन्होंने कहा कि पैपिलोमा वायरस (एचपीवी) टाइप 16 और 18, करविनोमा सर्विक्स का कारण बनते हैं। इनमें से ज्यादातर एचपीवी इंफेक्शन ठीक हो जाता है लेकिन लगभग 20 फीसदी वायरस कैंसर में तबदील हो जाता है।

डॉ. कपूर ने बताया कि समय पर पैप स्मियर टेस्ट कर सर्वाइकल कैंसर से होने वाली मौतों को कम किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि कैंसर के इलाज में इमेज गाइडेड रेडिएशन थेरेपी, वॉल्युमेट्रिक आर्ट थेरेपी और इमेज मॉड्युलेटेड रेडिएशन थेरेपी बेहतरीन परिणाम देतीं हैं।

अच्छी खबर | लगातार दूसरे वर्ष देश के सर्वोच्च खेल पुरस्कार के लिए नामित हुए चूरू के पैरा ओलिंपिक एथलीट देवेंद्र झाझड़िया

राजस्थान के देवेंद्र झाझड़िया खेल रत्न के लिए फिर नामित

खेल संवाददाता | जयपुर

राजस्थान के पैरालिंपिक एथलीट देवेंद्र झाझड़िया को देश के सर्वोच्च खेल सम्मान राजीव गांधी खेल रत्न के लिए नामित किया गया है। चूरू के देवेंद्र लगातार दूसरी बार इस अवार्ड के दावेदार बने हैं। उन्हें पिछली साल भी नामित किया गया था, लेकिन तब किसी को यह पुरस्कार नहीं मिला, जिस पर काफी विवाद हुआ था। भारतीय एथलेटिक्स फैडरेशन ने देवेंद्र के अलावा कॉमनवेल्थ गेम्स के स्वर्ण विजेता डिस्कस थ्रोअर विकास गौड़ा व सीमा पूनिया को भी इस अवार्ड के लिए नामित किया है।

2004 में एथेंस पैरालिंपिक में देवेंद्र ने जैवेलिन थ्रो स्वर्ण पदक जीता था। 2013 में उन्होंने वर्ल्ड चैंपियनशिप में पीला तमगा अपने नाम किया था। भास्कर से बातचीत में देवेंद्र ने कहा कि एथलीट अंजू बॉबी जॉर्ज को तो वर्ल्ड चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीतने पर ही यह अवॉर्ड मिल गया था, मैंने तो स्वर्ण पदक जीता है। उन्होंने कहा कि मुझे उम्मीद है कि सही तरह से चयन होगा और पात्र खिलाड़ी को ही देश का सबसे बड़ा खेल पुरस्कार दिया जाएगा। मुझे उम्मीद है कि इस बार मैं इस अवार्ड का हकदार जरूर बनूंगा।

साभार: भास्कर

निजी क्षेत्र में विशेष योग्यजन को रोजगार की नई पहल

जयपुर। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि राज्य सरकार विशेष योग्यजनों के कल्याण के लिए पूर्ण रूप से प्रतिबद्ध है उन्हें हर स्तर पर लाभान्वित करने का निरन्तर प्रयास किया जा रहा है। इसी कड़ी में निदेशालय, विशेष योग्यजन द्वारा निजी कम्पनियों के साथ मिलकर प्राईवेट क्षेत्र में विशेष योग्यजनों को रोजगार दिलाने की नयी पहल शुरू की है।

डॉ. चतुर्वेदी विशेष योग्यजन निदेशालय एवं सार्थक एजुकेशनल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में सूचना केन्द्र जयपुर में आयोजित विशेष योग्यजन मेगा जॉब ऑफर मेले का उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने बताया कि विशेष येग्यजनों को रोजगार देने के लिए नई पहल के तहत 13 फरवरी, 2013 को विकल्प आउटसोर्सिंग सर्विसेज के सहयोग से रोजगार मेला लगाकर 88 विशेष योग्यजनों को रोजगार मुहैया कराया गया था। इसी सफलता को देखते हुए आज फिर से विशाल मेगा मार्ट, जयपुर रग्स कारपोरेट्स, कैफे काफी डे, जेनपेक्ट, ली मेरिडियन, फारच्यून, रेडफाक्स, इन्फोसिस एवं टेलीपरफोरमेंस निजी कम्पनियों में साक्षात्कार लेकर 100

विशेष योग्यजनों को रोजगार दिलाने का प्रयास किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि विशेष नि:शक्तता से प्रभावित विशेष योग्यजनों का राज्य सरकार द्वारा भामाशाह योजना के साथ घर घर जाकर सर्वे कराया जा रहा है। 15 अप्रेल, 2015 तक एक लाख 19 हजार सर्वे के तहत प्रश्नावली जारी की जा चुकी है। इस दौरान विशेष ध्यान रखा जायेगा कि कोई घर व परिवार सर्वे से छूट नहीं जाये। सर्वे के बाद विशेष शिविर आयोजित कर चिकित्सा प्रमाण पत्र एवं लेमिटेनेटेड पहचान कार्ड मौके पर ही जारी किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि पात्रताधारी विशेष योग्यजनों को आवश्यकतानुसार अंग, उपकरण वितरण करने के साथ कौशल विकास प्रशिक्षण देकर आत्म निर्भर बनाया जायेगा। डॉ. चतुर्वेदी ने कहा कि विशेष योग्यजनों के प्रति समाज में दया व करूणा का ही नहीं बल्कि सम्मान एवं संबल का भाव भी रखें तथा उन्हें सहयोग प्रदान करें ताकि वे स्वयं जीवन की नयी उंचाईयों को छू सके और समाज की मुख्यधारा से जुड़कर गौरव महसूस करें। डॉ. चतुर्वेदी ने विशेष योग्यजन रोजगार मेले के उद्घाटन के बाद रोजगार के लिए विभिन्न कम्पनियों द्वारा साक्षात्कार के लिए लगायी स्टालों का अवलोकन करते हुए उनके द्वारा साक्षात्कार के लिए किये जा रहे पंजीयन एवं प्रक्रिया की जानकारी ली। उन्होंने रोजगार मेले में उपस्थित विशेष योग्यजनों से भी बात कर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना और अधिकारियों को समाधान करने के लिए आवश्यक निर्देश दिये। डॉ. चतुर्वेदी ने रोजगार मेले के सर्वप्रथम विमंदित गृह में रह रही बालिका सुश्री अनिता मीणा के साथ फीता काटकर शुभारंभ किया। इस अवसर पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के प्रमुख शासन सचिव सुदर्शन सेठी, निदेशक अम्बरीश कुमार, विशेष योग्यजन निदेशक पी.आर.पण्डित, अतिरिक्त निदेशक नव रतन कोली, सार्थक एजुकेशनल ट्रस्ट के निदेशक डॉ. जितेन्द्र अग्रवाल सहित विभिन्न निजी संस्थाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे।

मेगा जॉब फेयर में 550 विशेष योग्यजनों का पंजीयन

विशेष योग्यजन निदेशालय एवं सार्थक एजूकेशनल ट्रस्ट के सहयोग से सूचना केन्द्र जयपुर में 2 मई, 2015 को आयोजित विशेष योग्यजन मेगा जॉब फेयर में 550 विशेष योग्यजनों का पंजीयन किया गया है। अतिरिक्त निदेशक नवरतन कोली ने बताया कि मेगा जॉब फेयर में आये विशेष योग्यजनों का विभिन्न कम्पनियों द्वारा साक्षात्कार लिया गया। साक्षात्कार लेने के बाद पात्रता रखने वाले विशेष योग्यजनों को जॉब के लिए चयन करने की सूचना कम्पनियों द्वारा टेलीफोन एवं मेल आईडी पर दी जायेगी।

जयपुर नगर निगम में पेडणेकर ने संभाला कार्यभार

जयपुर। नगर निगम के नवनियुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी आशुतोष ए.टी. पेडणेकर ने निगम मुख्यालय में अपने पद का कार्यभार ग्रहण कर लिया। भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी आशुतोष ए.टी. ने कार्यभार ग्रहण करने पश्चात् कहा कि शहर की सफाई व्यवस्था को सुदृढ़ करना, रोड़ लाईट व्यवस्था में सुधार, अतिक्रमणों को रोकना, शहर के सौन्दर्यन को बरकरार रखना एवं वित्तीय स्थिति को शीघ्रतिशीघ्र ठीक करना उनकी प्राथमिकता होगी।

चारू गुप्ता दौसा जिला वैश्य महासम्मेलन की प्रभारी नियुक्त

जयपुर। अन्तर्राष्ट्रीय वैश्य महासम्मेलन की इकाई राजस्थान के प्रदेशाध्यक्ष आत्मा राम गुप्ता ने श्रीमती चारू गुप्ता को संगठन का दौसा जिले का प्रभारी मनोनीत किया है। इस अवसर पर श्रीमती चारू गुप्ता ने कहा कि समाज के प्रत्येक परिवार को संगठन से जोडना उनकी प्राथमिकता रहेगी। तथा संगठन की मजबूती के लिये सामाजिक गतिविधियों में सभी की भागीदारी सुनिश्चित करेंगी।

दौसा जिले के अध्यक्ष मनोहर लाल गुप्ता एवं पदाधिकारियों एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने उनके मनोनयन पर खुशी जाहिर की और विश्वास व्यक्त किया कि समाज के प्रत्येक तबके के उत्थान और विकास के लिये वे सबको साथ लेकर चलेगी।

माता-पिता की सेवा करें

पेड़ बूढ़ा ही सही, आंगन में लगा रहने दो
फल न सही, छांव तो देगा....

दृष्टिबाधित बालक-बालिकाओं के लिए

लुई-ब्रेल दृष्टिहीन विकास संस्थान, जयपुर द्वारा संचालित

दृष्टिहीन आवासीय प्रशिक्षण केन्द्र

-: हमारे द्वारा देय सेवाएँ :-

- प्रशिक्षित अध्यापकों द्वारा ब्रेललिपि द्वारा अध्यापन
- कंप्यूटर टाईपिंग एवं शॉर्टहैंड द्वारा स्टेनोग्राफी का प्रशिक्षण
- नि:शुल्क भोजन एवं आवास व्यवस्था
- नि:शुल्क परामर्श केन्द्र

दृष्टिहीन बालक नहीं जानते रोशनी कैसी होती है

इसके बाद भी दृष्टिहीनों में एक सक्षम नागरिक बनने की एक असीमित क्षमता है। उन्हें चाहिये विशेष प्रशिक्षण एवं सुविधाएं। सक्षम नागरिकों का दायित्व है, इस कार्य में सहयोग करना।

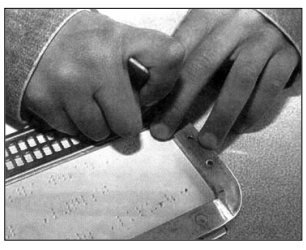

एम.पी. गुप्ता अध्यक्ष | ओमप्रकाश अग्रवाल सचिव | जयप्रकाश गुप्ता कोषाध्यक्ष

लुई-ब्रेल दृष्टिहीन विकास संस्थान

एच-32, बढ़ारणा, टेलीकॉम ट्रेनिंग सेन्टर के पीछे, वाया रोड नं. 14, वी.के.आई. एरिया, जयपुर-302013, फोन:0141-4023328, 2235738, मो.:09314561988 (सचिव)